IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, October 2023

रीवा जिले में कृषि भूमि के स्थानिक, सामयिक परिवर्तन एवं समन्वित विकास का भौगोलिक अध्ययन

प्रकाश कुमार पाण्डेय* डॉ. ए. के. सिंह**
*शोधार्थी भूगोल, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
**प्राध्यापक भूगोल, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांशः कृषि भूमि उपयोग का संबंध ऐसी भूमि से है जिस पर वर्तमान समय में कृषि की जा रही हो, इसके अंतर्गत कृषि भूमि उपयोग के तीन महत्वपूर्ण पक्षों, बोया गया क्षेत्रफल, द्विशस्यीय भूमि उपयोग का सबसे महवपूर्ण पक्ष है, इसके उपयोग की विभिन्न अवस्थाएं मानव की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास के स्तर की द्योतक है। सामान्यतः मानव कृषि कार्य से संबंधित विभिन्न सुविधाओं का विकास कर कृषित भूमि के विस्तार के लिए सदैव जागरूक रहता है। धरातलीय दृष्टि से इस क्षेत्र में अनेक असमानताएं दृष्टिगोचर होती है। रीवा जिले के उत्तर भाग में समतल मैदान है जो नदियों द्वारा लायी गयी मिट्टी से बना है। जबकि दक्षिणी भाग पर्वतीय है जो कैमूर श्रेणियों का क्षेत्र है और मध्यवर्ती भू–भाग पठारी तथा कटा–फटा है। दक्षिणी पर्वती भाग एवं मध्य वनों का पठारी भाग में चूनायुक्त कठोर प्राचीन शैल मिलती है। अतः धरातलीय दृष्टि से यह भाग पर्वतीय श्रेणियों, पठारों एवं मैदानी सभी का मिश्रित रूप है।

मुख्य शब्द–कृषि, भूमि, स्थानिक, सामयिक, समन्वित विकास, उत्पादकता एवंआर्थिक विकास।

संदर्भ ग्रंथः

[1]. जैन, पी.सी.– भारत में कृषि विकास, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, वर्ष 2008
[2]. मध्यप्रदेश का आर्थिक सर्वेक्षण – आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय, म.प्र., वर्ष 2018–19
[3]. मुकर्जी, रवीन्द्रनाथ, सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी, विवेक प्रकाशन, दिल्ली, वर्ष 1989
[4]. अग्रवाल, एन.एल. – भारतीय कृषि अर्थतंत्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, वर्ष 1998
[5]. कृषि साहित्य – मध्यप्रदेश किसान एवं कृषि विकास विभाग, संयुक्त संचलक कृषि, जिला–रीवा (म.प्र.), वर्ष 2008
[6]. जैन, एस.सी. – ग्रामीण एवं कृषि विपणन, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल, वर्ष 2018, पृष्ठ 38
[7]. कुमार, प्रमिला – मध्यप्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमिक, भोपाल (म.प्र.), वर्ष 2006